17-25

एक तुलना और एक अंतिम स्तुति

जैसे उसकी पत्री अन्त की ओर बढ़ती है, यहूदा ने झूठे उपदेशकों की तुलना मसीही व्यवहार के आदर्श के साथ की। मसीहियों को परमेश्वर के साथ अपने संबंध के लिए उत्तरदायित्व लेना था। उन्हें प्रेरितों के वचन स्मरण रखने थे और अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करनी थी। साथ ही उन्हें उन का भी ध्यान रखना था जो आत्मिक रीति से दुर्बल थे। उन्हें ऐसों को प्रोत्साहित कर के प्रभु के लिए लौटा कर लाना था।

एक तुलना: विभाजन करने वाले बनावटी बनाम विश्वासयोग्य विश्वासी (17-23)

17पर हे प्रियो, तुम उन बातों को स्मरण रखो; जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहिले कह चुके हैं। 18वे तुम से कहा करते थे, "पिछले दिनों में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे, जो अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे।" 19ये तो वे हैं, जो फूट डालते हैं; ये शारीरिक लोग हैं, जिन में आत्मा नहीं। 20पर हे प्रियों तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए। 21अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो। 22और उन पर जो शंका में हैं दया करो। 23और बहुतों को आग में से झपट कर निकालो, और बहुतों पर भय के साथ दया करो; वरन उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है।

आयत 17. यहूदा सीधे अपने पाठकों को संबोधित करने की ओर वापस आया, जैसे उसने आयत 3 में किया था। पाठकों से उसके आग्रह कि वे "विश्वास के लिये पूरा यत्न" करें (आयत 3) और मसीह की **उन बातों को स्मरण रखो** जो प्रेरितों द्वारा कही जा चुकी थीं, के निवेदन के मध्य, यहूदा ने झूठे उपदेशकों का वर्णन किया जिनका सामना कलीसिया को करना पड़ रहा था। यह स्पष्ट है कि लेखक का उद्देश्य था कि अपने पाठकों की उन्नति करे और उन्हें प्रोत्साहित करे। उसने आरंभ में उनकी उन्नति के लिए "साझा विश्वास" (आयत 3) के विषय में

लिखना चाहा था, परन्तु वह बाध्य हुआ कि उन्हें लिखे, और सचेत करे और उन झूठे उपदेशकों की ओर से मोड़े जो "चुपके से उन में आ मिले" थे (आयत 4)। चाहे वह उन्हें "साझा विश्वास" के विषय में लिखे अथवा झूठे उपदेशकों के, यहूदा का उद्देश्य था कि वह मसीहियों की विश्वास में उन्नति करवाए।

यहूदा ने यह स्पष्ट किया कि मसीहियों को चकित नहीं होना चाहिए जब उनके मध्य में से ऐसे लोग उठ खड़े हों जो भक्तिहीन हों तथा मसीह की शिक्षाओं को बिगाड़ दें। नए तथा पुराने नियम में ऐसे लोगों की कहानियाँ बारंबार दी गई हैं जो परमेश्वर के लोगों के मध्य घुस आए और उनका उपयोग अपने लाभ के लिए किया। ऐसे लोग सदा रहेंगे जो मसीह की देह का प्रयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ तथा अपनी महिमा के लिए करेंगे। यहूदा ने अपनी बात पर बल देने के लिए कहा कि **प्रेरितों ने इस विषय में पहले से ही बता दिया** था। पौलुस की पत्रियों को उद्धृत करने के स्थान पर, जैसा पतरस ने किया था (2 पतरस 3:15, 16), यहूदा ने उन शिक्षाओं को लिया जो सभी "प्रेरितों" में सामान्य थीं।

यहूदा के मन में विशेषतया कौन थे जब उसने **हमारे प्रभु यीशु मसीह** "के प्रेरित" कहा अनिश्चित है। क्योंकि वह यीशु के भाइयों में से एक था, इसलिए यह आशा की जाती है कि वह बारहों से परिचित रहा होगा। पौलुस ने यहूदा के भाई याकूब का उल्लेख "प्रेरित" के समान किया (गलतियों 1:19)। क्या यहूदा याकूब और अपनी गिनती प्रेरितों में करता? लूका ने बरनबास और पौलुस को दो बार प्रेरित कहा (प्रेरितों 14:4, 14), यद्यपि उसके कहने का अर्थ संभवतः अन्ताकिया की कलीसिया के प्रेरित था। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यहूदा उन बारहों के अतिरिक्त किसी अन्य को उनमें जिन्हें प्रभु से सीधे प्रेरित होने का अधिकार मिला था, सम्मिलित कर लेता। यह स्पष्ट है कि यहूदा अपने आप को उनमें से एक मानता था जो प्रेरितों से मिले सन्देश को आगे पहुँचा रहे थे चाहे वह अपने आप को उनमें से एक नहीं भी मानता था।

यहूदा के आरंभ करने का बिंदु था कि "प्रेरित" मसीही सन्देश के आधिकारिक स्त्रोत थे। आधिकारिक स्त्रोत होने की क्षमता में वे कम से कम बारह तथा पौलुस थे (1 कुरिन्थियों 15:5-9)। हम उन बारहों में से अधिकांशतः के कार्यों के बारे में कम ही जानते हैं। उनमें से प्रत्येक की बहुत व्यापक सेवकाई रही होगी, जिसका दूर-गामी प्रभाव रहा होगा; परन्तु उस समय के लिए, यहूदा का ध्यान अन्य विषयों पर था। प्रभु का भाई चाहता था कि उसके पाठक जानें कि प्रेरितों से मिला एक सन्देश है। जिन झूठे उपदेशकों का यहूदा सामना कर रहा था वे प्रेरितों से मिले सन्देश की मुख्य बातों का इनकार कर रहे थे। इस कारण से, विश्वासियों के उद्धार पर ख़तरा था। कलीसिया किन बातों पर विश्वास करती है यह महत्वपूर्ण है; सिद्धांत का महत्व है।

आयत 18. जब यहूदा ने लिखा **वे तुम से कहा करते थे** तब भी प्रेरित ही विषय थे। मसीह के प्रेरितों ने उन्हें झूठे उपदेशकों के विषय में सचेत किया था। यहूदा के पाठकों को चकित नहीं होना चाहिए था कि झूठे उपदेशक मसीही सिद्धांत को बिगाड़ने और अनैतिक मार्गों पर चलने के लिए तैयार थे। प्रेरितों ने

मसीहियों को सिखाया था कि ऐसा होगा।

यहूदा ने ऐसा होने के विषय प्रेरितों द्वारा दी गई किसी सटीक चेतावनी को तो उद्धृत नहीं किया, परन्तु नए नियम में अनेकों हैं। पौलुस ने "अंतिम दिनों" में आने वाले उपदेशकों के बारे में चेतावनियाँ दीं (2 तिमुथियुस 3:1-5; देखें प्रेरितों 20:29, 30; 1 तिमुथियुस 4:1-3), और उसने उनका वर्णन यहूदा से मिलते-जुलते शब्दों में दिया। यदि यहूदा ने पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाओं के बाद के पहले दो दशकों में यह पत्री लिखी, तो संभवतः वह नए नियम के कुछ दस्तावेजों के बारे में जानता था। परन्तु इसमें बहुत कम संदेह है कि यरूशलेम के प्रेरितों ने भी ऐसी ही अनेकों चेतावनियाँ दी थीं। पतरस के शब्द यहूदा के शब्दों के बहुत समान हैं: "पहले यह जान लो, कि अन्तिम दिनों में हंसी ठट्ठा करने वाले आएंगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे" (2 पतरस 3:3)।

यूनानी शब्द जिसका अनुवाद हंसी ठट्ठा करने वाले (ἐμπαίκτης, *एम्पाइकटेस)* हुआ है वह केवल 2 पतरस 3:3 और यहूदा 18 में मिलता है। जब समझ-बूझ और सत्य विफल हो जाते हैं तब अधर्मियों के हाथ में प्रहार के लिए हंसी ठट्ठा करना सहज डंडा होता है। हंसी ठट्ठा, चतुराई के प्रत्युत्तर, तथा धूर्त तर्क उनको आकर्षित करते हैं जो सांसारिक दृष्टिकोण रखते हैं। आयत 15 में NASB चार बार "भक्तिहीन" शब्द का प्रयोग झूठे उपदेशकों के लिए करती है। इस आयत में फिर यहूदा ने **अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार** चलेंगे का स्मरण दिलाया। लगता है कि वह इन उपदेशकों का उल्लेख उनकी अभक्ति के बारे में कहे बिना नहीं कर सकता था।

यद्यपि पौलुस ने "अंतिम दिनों" शब्दों को अधिक प्रयोग किया है, परन्तु उसके मन में यहूदा की बात से भिन्न कोई बात नहीं थी जब उसने पिछले दिनों में लिखा। **पिछले दिनों में** के अंतर्गत वह समय भी था जिसमें यहूदा और उसके पाठक जीवित थे। (देखें इब्रानियों 1:2, जहाँ इसे "अंतिम दिनों में" कहा गया है।) यह प्रमाणित करने के लिए कि वे अंतिम दिनों में रह रहे थे, यहूदा ने अपने पाठकों के अनुभवों का उल्लेख किया, जिसमें "ठट्ठा" करने वालों के आने के विषय, जो "अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार चले" भविष्यवाणियों का पूरा होना सम्मिलित था (देखें 1 तिमुथियुस 4:1)। यहूदा के पाठकों को भूतकाल से उन तक आने वाली चेतावनियों को स्मरण रखने की आवश्यकता थी। प्रेरितों की चेतावनियाँ उन्हें झूठे उपदेशकों से उचित व्यवहार करने के लिए सामर्थ्य प्रदान करेंगी।

आयत 19. यहूदा ने स्पष्ट किया; उसे किसी भ्रम की कोई संभावना नहीं चाहिए थी। प्रेरितों की भविष्यवाणियाँ उन्हीं उपदेशकों को ध्यान में रख कर कही गई थीं जो यहूदा द्वारा संबोधित कलीसियाओं में घुस आए थे। यहूदा द्वारा प्रयुक्त वाक्यांश ये तो वे हैं में निरादर है। उसने इसे बारंबार प्रयोग किया (आयतें 10, 12, 16)। यह संभव है, काफी संभव है कि, झूठे उपदेशक उन पर जो उनकी शिक्षाओं का प्रतिरोध करते थे **शारीरिक** होने का दोष लगाते थे। संभवतः वे विशेष आत्मिक प्रकाशन पाने का दावा करते थे। यहूदा ने कहा कि वस्तुस्थिति

इससे बिलकुल विपरीत थी। झूठे उपदेशक ही थे जो "शारीरिक" (ψυχικός, *सुखिकोस)* थे। वे ही थे जिन में **आत्मा नहीं** थी। जिस शब्द का अनुवाद "शारीरिक" हुआ है उसे अंग्रेज़ी में अनुवाद करना कठिन है। इसका तात्पर्य है कि उनके मन और हृदय अपनी अभिलाषाओं के प्रति इतने आसक्त थे कि उन्हें मात्र पाशविक त्रुटी को छोड़ और किसी बात में संतुष्टि प्राप्त नहीं होती थी।[1]

झूठे उपदेशक ही थे **जो फूट डालते थे**। यह उल्लेखनीय है कि यहूदा यह समझ गया था कि मसीह की देह में फूट का स्त्रोत उन्हीं से था जो आरंभ से मिली हुई शिक्षाओं तथा परंपराओं में नए परिवर्तन करते थे। यहूदा और अन्य जो प्रेरितों की शिक्षाओं का पालन करते थे वे फूट के स्त्रोत नहीं थे। अनेकों अवसरों पर, लोगों ने मसीह की देह में नई शिक्षाएँ प्रचलित की हैं। जब विश्वासी आपत्ति करते हैं तो नई बातों के लाने वाले उन्हें फूट डालने का दोषी ठहराते हैं। प्रत्येक जो नया और परिवर्तनात्मक और प्रगतिशील है वह सदा ही भला नहीं होता है। जिन कलीसियाओं को यहूदा ने संबोधित किया वे नए उपदेशकों के कारण उन्नत नहीं हुई थीं। वे नवीन आगंतुक ही थे जो फूट का स्त्रोत थे। उन्होंने ही देह को विरोधी गुटों में बाँट दिया था।

आयत 20. मसीहियों पर अपनी आत्मिक भलाई का उत्तरदायित्व है। यहूदा ने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि उन्हें [अपनी] **उन्नति करने** के कार्य में संलग्न होना है। इसका यह अर्थ नहीं था कि परमेश्वर ने उन्हें अपनी ही योजनाओं पर छोड़ दिया था। परमेश्वर के लोगों के समूह के लिए आत्मिक पोषण का स्त्रोत **अति पवित्र विश्वास** था। उस विश्वास की विषय-वस्तु प्रभु यीशु मसीह है। इसके अतिरिक्त, "अति पवित्र विश्वास" में उसके प्रेरितों द्वारा मसीह के विषय प्रकाशन द्वारा कही गयी बातें भी सम्मिलित थीं। प्रेरितों में होकर विश्वास जिस माध्यम से आगे हस्तांतरित किया गया वह है पवित्र आत्मा। इससे और आगे, पवित्र आत्मा विश्वासी में निवास करती है और उसे सामर्थ्य देती है कि वह पाप से मुड़े और मसीह में विश्वास करे। इसलिए, यहूदा ने अपने पाठकों को निर्देश दिया कि **पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए रहना** आत्मिक उन्नति का वह भाग है जिसके लिए उन्हें महत्त्वाकांक्षी रहना चाहिए।

आयत 21. जैसे उसकी पत्री अन्त की ओर आई, यहूदा ने अपने पाठकों को मसीही उत्तरदायित्व के महत्व को स्मरण दिलाया। झूठी शिक्षाओं के प्रति उनका प्रतिरोध और प्रेरितों के विश्वास में उनका दृढ़ता से बने रहना उनके विश्वास के परिणाम और आशा के अन्त को निर्धारित करेगा। उस "विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (आयत 3) में दृढ़ता से बने रहने का अर्थ था कि वे परमेश्वर के राज्य में संभागी होने वालों के समान जीवन व्यतीत करें।

न तो परमेश्वर के राज्य और न ही "अति पवित्र विश्वास" के विषय में एक दूसरे के बिना कुछ कहा जा सकता था। यदि वे बिलकुल एक दूसरे के समान नहीं हैं, तो कम से कम वे परस्पर निर्भर तो हैं ही। एक अर्थ में यीशु की सेवकाई के दिनों में राज्य विद्यमान था (मत्ती 12:28), और एक अर्थ में उसे अभी आना शेष

था (मरकुस 9:1)। यीशु के जीवन और शिक्षाओं ने राज्य के द्वार को खोल दिया, परन्तु राज्य और अधिक सम्पूर्णता से कार्यान्वित हुआ उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण के पश्चात। एक महत्वपूर्ण आश्रय है जिसके अंतर्गत राज्य की स्थापना पतरस द्वारा पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार प्रचार करने से हुई, लोगों ने जिसका प्रत्युत्तर पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने के द्वारा दिया (प्रेरितों 2:37-42)। पौलुस कह सका कि मसीह ने "हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया" (कुलुस्सियों 1:13)।

यद्यपि मसीही परमेश्वर के राज्य में इस जीवन में संभागी होते हैं, फिर भी एक तात्पर्य है जिसके अंतर्गत वे राज्य की **प्रतीक्षा** कर रहे हैं। यहूदा ने अपना ध्यान देखते रहने की ओर किया। परमेश्वर के लिए प्रतीक्षा करना, प्रतीक्षा करना कि वह अपनी इच्छा के विषय, अपने समयानुसार आज्ञा दे, परमेश्वर के बहुतेरे लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण अनुभव रहा है। कुछ भजन कारों की आत्मिक उत्कंठा की पराकाष्ठा यहूदा की मनोभावना से कुछ विशेष भिन्न नहीं थी। उदाहरण के लिए, हम पढ़ते हैं, "यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह" (भजन 27:14); "हम यहोवा का आसरा देखते आए हैं; वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है" (भजन 33:20)। यहूदा के समान पौलुस ने भी यह स्पष्ट किया कि प्रतीक्षा के लिए कुछ है। उसने कहा "मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते" (1 कुरिन्थियों 15:50)। मृत्यु के इस ओर मसीही मांस और लोहू ही रहते हैं। जब तक यह मांस-और-लोहू वाला अस्तित्व मसीहियों का गुण है, लालसा करने के लिए, प्रत्याशा के लिए, उनके पास कुछ है। जब यहूदा ने कहा जो मसीह के हैं वे आशा देखते रहें तो यह **तीव्र लालसा** की बात थी (देखें 2 तिमुथियुस 4:8)।

किसी बात का अभी भी पास होने और उसके लिए प्रतीक्षा भी करने के बीच का तनाव न केवल वर्तमान में परमेश्वर के राज्य की मीरास का गुण है, वरन यह अनन्त जीवन की अनुभूति का भी अभिन्न अंग है। मसीह में **अनन्त जीवन** का आरंभ हो गया है, परन्तु वर्तमान के लिए विश्वासयोग्यता विषय है। बाद में, जब मसीह प्रकट होगा, जब अंतिम तुरही फूंकी जाएगी (1 कुरिन्थियों 15:52), तब एक रूपान्तरण होगा। नाशवान मांस-और-लोहू अविनाशी को पहन लेंगे। **हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया** के अनुसार, अमरता इस संसार के अस्थायी और नश्वर जीवन को निगल लेगी। जब मसीही "जीवन" की लालसा करते हैं, तो वे उसके अनन्त होने की सोच रखने में गलत नहीं हैं। शब्द "अनन्त" (αἰώνιος, *ईओनिओस*) में अवधि का न होना निहित है। फिर भी यह शब्द समय की मात्रा को उतना अधिक नहीं दिखाता है – जिसका कोई अन्त नहीं होगा – जितना उस जीवन की गुणवत्ता को दिखाता है। यह आने वाले युग के जीवन का विशिष्ट गुण है।[2] यद्यपि "अनन्त जीवन" की परिपूर्णता का आना अभी शेष है, किंतु एक तात्पर्य है जिसके अंतर्गत मसीह में होना अभी से उस "अनन्त जीवन" को थाम लेना है।

पुराने नियम में विशेषकर, "जीवन" का तात्पर्य एक ऐसे अस्तित्व को

दिखाता है जिसमें परमेश्वर के साथ शान्ति, बुद्धिमता, और आशीष है। जब मूसा ने इस्राएल से कहा, "सुन, आज मैं ने तुझ को जीवन और मरण, हानि और लाभ दिखाया है" (व्यवस्थाविवरण 30:15), तो वह इस्राएल से चाह रहा था कि वे कनान में उनके आने वाले जीवन की गुणवत्ता का ध्यान करें। इसी प्रकार जब यीशु ने कहा, "पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे" (यूहन्ना 5:26), तो वह परमेश्वर द्वारा उसे प्रदान किए गए जीवन की गुणवत्ता की बात कर रहा था। जीवन की जिस गुणवत्ता को प्रभु यीशु ने अनुभव किया था उसके लोग भी उसी गुणवत्ता को अनुभव करेंगे। "अनन्त जीवन" अभी है, और आने वाला भी है। जैसा यहूदा ने कहा, हम उसकी "आशा देखते" हैं।

जो मसीह में संभागी हैं, वे इस संसार में जीवन की उस गुणवत्ता के भागी हैं जो आने वाले युग की विशेषता है। यीशु ने कहा "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है" (यूहन्ना 3:36)। वह उनके पास यहाँ और अभी है। उसने आगे कहा, "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है" (यूहन्ना 5:24)। **अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखने** के लिए आवश्यक आत्मिक संसाधनों में सम्मिलित हैं पवित्र जीवन व्यतीत करना, परमेश्वर की ऐसी आराधना और सेवा करना जैसी उसे भाती है। व्यक्ति अपने आप को प्रेम में बनाए रखता है जब वह प्रभु के पुनःआगमन की प्रतीक्षा और आशा रखता है।

आयतें 22, 23. क्योंकि कोई दुर्बल है, क्योंकि वह झूठे उपदेशकों की पाखंडी शिक्षाओं द्वारा भटक गया है, इसलिए मसीहियों को उसका तिरस्कार कर के उसे भुला नहीं देना चाहिए। विश्वासियों को **उन पर जो शंका में हैं दया करनी चाहिए**। उनके लिए जो अपनी ही बुद्धिमता पर विश्वास रखते हैं, जिन्होंने फूट डाली, जो "परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल" (आयत 4) डालने के लिए दृढ़ थे, उनके लिए यहूदा के पास बहुत कम समय था। लेकिन सभी शंका करने वाले परमेश्वर के राज्य के लिए सम्पूर्णतः खो नहीं गए थे। कुछ ऐसे भी थे जो विश्वास में युवा थे, जो उन्हें मानना चाहिए उसके विषय अनिश्चित थे, भरोसा करने वाले तथा दयालु थे। उनकी गिनती भी "शंका करने वालों" में थी। यहूदा ने उनसे, जो विश्वास में दृढ़ थे, कहा कि वे उन पर दया और कृपा करें। विश्वासियों को शंका करने वालों को प्रभु की ओर लौटा कर लाना था (देखें याकूब 5:20)।

यह अनिश्चित है कि इन आयतों में यहूदा के मन में दो या तीन लोगों के समूह थे। लेखक ने कम से कम दो समूहों में भिन्नता की। आयत 22 में शंका करने वालों का उल्लेख करने के पश्चात, उसने आयत 23 में आगे लिखा कि और बहुतों **को निकालो**। "और बहुतों" शंका करने वालों से भिन्न लोगों के लिए आया है। संभवतः यहूदा तीन समूहों में भिन्नता करना चाहता था: (1) बहुत जो शंका करने वाले थे, (2) बहुतों को जिन्हें **आग** में से झपट कर निकालना था, और (3) बहुतों को जिन पर विश्वासियों को **दया** करनी थी। बाद के दोनों समूहों के निकटता से संबंधित हैं सुझाव देता है कि यहूदा केवल दो समूहों का उल्लेख कर रहा था। कुछ बातों में दोनों के मध्य कुछ अंश तक समानता हो सकती है। यह

असंभाव्य है कि लेखक के मन में लोगों के तीन प्रकार के समूहों के परस्पर स्पष्ट भिन्नता थी। शंका करने वालों में से कुछ वे हो सकते थे जिन्हें आग में से झपटकर निकालना था। सम्पूर्ण 22 और 23 आयत में "**दया**" ही कार्यकारी शब्द है।

संभवतः बाइबल में "पाप से घृणा किंतु पापी से प्रेम करो" का यहूदा की इन अंतिम आयतों से अधिक स्पष्ट और कोई चित्रण नहीं है। जब कोई किसी भाई को किसी पाप या सैद्धांतिक गलती में पड़ते देखता है, तो उसे यथासंभव प्रयास करना चाहिए कि उसे लौटा लाए। मसीही समाज को डांवांडोल होती हुई आत्मा को कभी त्याग नहीं देना चाहिए।

समापन स्तुति (24, 25)

[24]अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष कर के खड़ा कर सकता है। [25]उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।

आयत 24. यद्यपि उसकी पत्री छोटी है और आज के पाठक के लिए उसकी विषय वस्तु कुछ उबाऊ हो सकती है, यहूदा ने अन्त बाइबल की सबसे सुन्दर स्तुतियों में से एक से किया। यहूदा पहले ही अपने पाठकों को स्मरण दिला चुका था कि उन्हें अपनी उन्नति करनी है तथा अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखना है। अब उसने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की बुलाहट का परमेश्वर के अनुग्रह के साथ तालमेल बैठाया। इसमें कोई संदेह न रहे। मसीह विश्वासी के साथ सदा खड़ा रहेगा, उसे संभाले हुए, उसे गिराने से बचाए हुए। यह प्रभु यीशु मसीह ही है जो **तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है**। इन शब्दों में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे विश्वासी धृष्ट होने के लिए प्रोत्साहित हो जाए। विश्वास में स्थिर खड़े रहने का उत्तरदायित्व विश्वासी के कन्धों से नहीं हटाया जा सकता है। आश्वासन यह है कि जो अपना विश्वास मसीह में लाएगा, जो मार्गदर्शन के लिए उसकी ओर देखता रहेगा, जो पश्चाताप करके पापों से फिर जाएगा – ऐसा करने वाला खड़ा रहेगा। परमेश्वर **उसे अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष कर के खड़ा कर सकता है**।

आयत 25. यहूदा को कोई समस्या नहीं थी कि वह परमेश्वर को उद्धारकर्ता भी कहे और साथ ही उसके न्यायी होने का भी सोचे (आयत 4)। यदि परमेश्वर न्यायी है, यीशु भी न्यायी है। यही आयत 15 का तात्पर्य है। यहूदा ने **यीशु मसीह** और परमेश्वर के विषय समान महिमा वाले शब्दों में विचार किया। मसीही विश्वास ईश केंद्रित है। वह मसीह केंद्रित है। समस्त कृपा, समस्त भलाई, सारे सदगुण, सारी आराधना परमेश्वर की **महिमा, गौरव, प्रभुत्व और अधिकार के लिए है**। आमीन।

अनुप्रयोग

प्रभु की प्रतीक्षा करना (आयत 21)

बहुत वर्षों तक ऐनी मे एल्सटन ल्यूइस, मेम्फिस, टेनिस्सी में हार्डिंग यूनिवर्सिटी ग्रैजुएट स्कूल ऑफ रिलीजन में पुस्तकालय अध्यक्ष (लाइब्रेरियन) थी। उसे पुस्तकालय से प्रेम था, और उन विद्यार्थियों से भी जो उसकी कक्षाओं से होकर जाते थे। ऐनी मे अपने विद्यार्थियों को भजन 130 से प्रेम करना सिखाती थी। उस भजन की 6 आयत कहती है, "पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, हां, पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, उस से भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूं।" उसे यह कहने में कोई संकोच नहीं था कि भजन 130 उसके सबसे मनपसंद भजनों में से एक था। ऐनी इस संसार से मार्च 9, 2006 को कूच कर गयी। हम में से जो उसके संपर्क में आए थे उसे शीघ्र भुला नहीं पाएंगे। हम उसे स्मरण रखेंगे और प्रतीक्षा करेंगे। हम सामान्यतः हो सकने वाली से कुछ और अधिक दृढ़ता तथा धैर्य के साथ प्रतीक्षा करेंगे क्योंकि उसने हमें भजन 130 की ओर निर्देशित किया।

मुझे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं अधीर आत्मा का हूँ। मेरे लिए किसी की भी प्रतीक्षा करना कठिन है। मेरे लिए प्रभु की प्रतीक्षा करना कठिन है। मैंने पाया है कि जब मैं प्रतीक्षा करता हूँ तब वह अपने उद्देश्यों को ऐसे पूरा करता है जैसी मैंने कभी अपेक्षा नहीं की थी। वह उन्हें ऐसी समय-सारिणी के अनुसार पूरा करता है जो मेरी कभी नहीं हो सकती थी। यहूदा के समान, हम आशा रखते हैं। भविष्य पूर्णतः अनिश्चित है। पूरा करने के लिए कार्य शेष है। ऐसे लोग हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं और हम जिन्हें परिवर्तित करना चाहते हैं। सहन करने के लिए दुःख हैं। पीड़ा निकट ही है। लोग हैं जिन से हमें विदा लेनी है। यह सब परमेश्वर के समय में पूरा होता जाएगा। हम अपने आप को उसके हाथों में छोड़कर उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

"आशा देखते रहो" को कम से कम दो व्याख्याओं से देखा जा सकता है। कोई उत्सुक लालसा के साथ प्रतीक्षा कर सकता है। कोई वैसे प्रतीक्षा कर सकता है जैसे बच्चा क्रिसमस की प्रतीक्षा करता है। किंतु, उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करना एक और तात्पर्य भी रख सकता है। उत्सुकता का अर्थ अनिश्चितता भी हो सकता है। उत्सुक होने से आशंका का, अज्ञात भय का अभिप्राय भी हो सकता है। जब यहूदा ने कहा कि हम आशा रखते हैं, तो उसका अभिप्राय पहले वाले अर्थ से था। मसीही मसीह के पुनःआगमन के लिए उत्सुक हैं, न कि उसके पुनःआगमन के बारे में उत्सुक हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]यह शब्द अन्य स्थान 1 कुरिन्थियों 2:14; 15:44, 46 और याकूब 3:15 में पाया जाता है। वाल्टर बौअर के अनुसार यह शब्द संबंधित है "प्राकृतिक संसार के जीवन और जो कुछ भी उसका

है से, उस अनुभव की तुलना में जिसका केन्द्रीय गुण [आत्मा] है" (वाल्टर बौअर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, तीसरा संस्करण, संशोधन एवं सम्पादन, फ्रेडरिक विलियम डैंकर [शिकागो: युनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2000], 1100)। [2]शब्द *ईओनिओस*, "अनन्त," संज्ञा "युग" αἰών (*ईओन*) का विशेषण रूप है। इस प्रकार, "अनन्त" का उपयुक्त अर्थ है "आने वाले युग का विशिष्ट गुण।" जब कोई विश्वासी बपतिस्मे में मसीह को पहन लेता है, तो वह उस जीवन का उत्तराधिकारी हो जाता है जो किसी-न-किसी प्रकार से आने वाले युग में अनुभव किए जाने वाले जीवन के समान है।